INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

वामनावतार : पौराणिक, वैदिक एवं काव्य-साहित्यिक स्रोतों में एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. निशा
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग
डी.ए.वी. शताब्दी महाविद्यालय, कोटखाई, शिमला,
हिमाचल प्रदेश

प्रस्तावना

भारतीय पौराणिक तथा वैदिक परम्परा में भगवान् विष्णु के दश अवतारों में वामन अवतार पाँचवे अवतार के रूप में प्रतिष्ठित है। इन दश अवतारों में से वामन अवतार अत्यन्त प्रभावोत्पादक तथा विशेष महत्त्व रखता है। भारतीय संस्कृति में ऐसा माना जाता है कि धर्म की स्थापना तथा अधर्म के विनाश के लिए युग युगान्तर में ईश्वरीय अवतारों का प्रादुर्भाव होता रहा है। ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण, श्रीमद्भागवत पुराण, वामन पुराण, रामायण, महाभारत, कादम्बरी तथा शिशुपालवध आदि काव्य-ग्रन्थों में वामनावतार की कथा का वर्णन प्राप्त होता है।

भगवान् विष्णु के वामनावतार की कथा अपनी अलग ही विशेषता रखती है, क्योंकि इस अवतार में भगवान् ने किसी राक्षस अथवा अधर्मी शक्ति का शस्त्र द्वारा प्रत्यक्ष वध नहीं किया, बल्कि बुद्धि, कूटनीति, विनम्रता एवं धर्मयुक्त युक्ति के माध्यम से असुरराज बलि से तीनों लोकों के अधिकार को देवताओं में पुनः स्थापित कर लिया। यह भेद इस अवतार को शेष अवतारों से गुणात्मक रूप से पृथक करता है और इसे भारतीय चिन्तन-परम्परा में 'बल' के स्थान पर बुद्धि तथा 'विनय' की प्रतिष्ठा का प्रतीक बनाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य संस्कृत साहित्य के विभिन्न कालखण्डों - वैदिक, ब्राह्मण, पौराणिक तथा काव्य-महाकाव्यों आदि में वामनावतार की कथा के विकास-क्रम का व्यवस्थित एवं तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में राजा बलि के यज्ञ, वामन के ब्रह्मचारी रूप में आगमन, भूमि-दान की याचना, शुक्राचार्य की चेतावनी, बलि की दृढ़ प्रतिज्ञा, वामन के विराट त्रिविक्रम रूप का प्रकटीकरण तथा अन्ततः बलि को पाताल अथवा सुतल लोक में प्रतिष्ठित किए जाने जैसे प्रसंग सम्मिलित किए गये हैं। यह कथा एक ओर दानी और दृढ़निष्ठ बलि की उदारता को उजागर करती है, तो दूसरी ओर यह भी संकेत देती है कि प्रबल और अलौकिक शक्ति का दर्प - चाहे वह कितने ही धर्मपरायण व्यक्ति में क्यों न हो - अन्ततः विनम्रता के समक्ष झुकता है।

वैदिक एवं ब्राह्मण साहित्य में वामनावतार

विष्णु का पाँचवाँ अवतार अदिति के गर्भ से हुआ था और इस अवतार में उन्होंने बौने का रूप धारण करके राजा बलि को छलकर उससे सारी पृथ्वी दान रूप में ले ली थी।[1] ऋग्वेद में विष्णु के त्रिधा विक्रम का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है।[2] अथर्ववेद में भी विष्णु का त्रिपद क्रमण संकेतित है -

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।

इतो धर्माणि धारयन्॥[3]

शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार विष्णु के इन तीन पदन्यासों में अखिल विश्व समाविष्ट है -

यैषु विष्णुस्त्रिषु पदेषु इष्टः तेषु विश्वं भुवनमाविवेशाँ॥[4]

तैत्तिरीय संहिता के अनुसार विष्णु ने वामन रूप में समस्त लोक विजित किये थे।[5] ऐतरेय ब्राह्मण के उल्लेखानुसार विष्णु असुरों से युद्ध करते हैं तथा तीनों पदों में नापे गए विजित क्षेत्र को इन्द्र के साथ प्राप्त कर लेते हैं।[6]

शतपथ ब्राह्मण में आख्यान आता है कि सुर-असुर संग्राम में देवों के पराजित होने पर दैत्यों ने विजित वसुन्धरा का जब विभाजन करना चाहा, तो देवों ने भी निज भाग की याचना की। दैत्यों ने वामनरूपी विष्णु की देह जितनी पृथ्वी देना स्वीकृत किया। इस पर विष्णु ने वामन रूप में विशालकाय पृथ्वी का क्रमण कर त्रिलोकी को माप लिया।[7]

रामायण एवं महाभारत में वामनावतार-कथा

रामायण के विवरणानुसार जब विष्णु भगवान् तपस्या कर रहे थे, तब विरोचनकुमार राजा बलि ने इन्द्र और मरुद्गणों सहित सारे देवताओं को पराजित करके उनका राज्य अपने अधिकार में कर लिया था।[8] तब देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान् विष्णु ने अदिति देवी के गर्भ से जन्म लिया और वामन रूप धारण कर बलि से तीन पग भूमि की याचना की।[9] बलि के तीन पग भूमि देने पर भगवान् ने तीनों लोकों का आक्रान्त किया और तीनों लोक देवराज इन्द्र को लौटा दिए।[10]

महाभारत के सभापर्व के अ अर्घाभिहरणपर्व के दाक्षिणात्य प्रति के अन्तर्गत भगवान् विष्णु के वराह, वामन, दत्तात्रेय, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा कल्कि आदि अवतारों का वर्णन किया गया है। वामनावतार का वर्णन करते हुए कहा गया है कि त्रेतायुग में दैत्यराज बलि के समान बलशाली महान वीर कोई नहीं था।[11] उस समय राजा बलि ने इन्द्र को परास्त कर इन्द्रलोक पर अधिकार कर लिया।[12] तब देवताओं की प्रार्थना करने पर श्रीहरि ने अदिति के पुत्र रूप में जन्म लिया[13] और ब्राह्मण वेश में बलि के यज्ञ में प्रवेश करके बलि से तीन पग भूमि दक्षिणा स्वरूप मांगी।[14] असुरराज ने भी वामन भगवान् को भूमि दान कर दी।[15] राजा बलि से भूमि पाकर वामन भगवान् अत्यन्त तेजी से बढ़ने लगे। उन्होंने तीन पगों में स्वर्ग, आकाश और पृथ्वी को माप लिया।[16] राजा बलि सहित समस्त विरोचन कुल को स्वर्ग से पाताल भेज दिया।[17]

वामन पुराण में वामनावतार का उल्लेख

वामन पुराण के अनुसार एक बार राजा बलि ने यज्ञ किया। यज्ञ में उपस्थित वामन देव से उन्होंने कहा कि आपको सुवर्ण-रत्नादि जो कुछ भी चाहिए, मैं आपको दूँगा। तब वामन देव ने राजा बलि से अग्नि तपने के लिए तीन पग भूमि की याचना की। वामन की यह वाणी सुनकर बलि ने वामन को तीन पग भूमि देने का वचन दिया। राजा बलि ने दान के लिए जैसे ही जल हाथ पर गिराया वैसे ही वामन विराट बन गए। विष्णु ने तीन पगों से तीनों लोकों को जीतकर तीनों लोक इन्द्र को दे दिए, और पृथ्वी के नीचे स्थित सुतल नामक पाताल-लोक राजा बलि को दे दिया।[18]

श्रीमद्भागवत पुराण में वामनावतार-प्रसंग

भागवत पुराण के अष्टम स्कन्ध में वामन अवतार की कथा सर्वाधिक विस्तार और भावनात्मक गहनता के साथ प्रस्तुत की गई है। यहाँ कथा का आरम्भ इन्द्र तथा बलि के मध्य हुए देवासुर-संग्राम से होता है, जिसमें बलि अपने गुरु शुक्राचार्य द्वारा प्रदत्त 'संजीवनी विद्या' की सहायता से अपनी मृत सेना को पुनर्जीवित करते हुए इन्द्र को पराजित करने में सफल होता है।[19] भयभीत इन्द्र तथा देवगण अपनी माता अदिति के पास जाते हैं, और अदिति भगवान् विष्णु की आराधना हेतु 'पयोव्रत' नामक व्रत का अनुष्ठान करती हैं, जिससे प्रसन्न होकर विष्णु स्वयं उनके गर्भ से वामन के रूप में जन्म लेने का वरदान देते हैं।[20] वामन भगवान् के जन्म का वर्णन भी अत्यन्त भव्य है, जिसमें समस्त प्राकृतिक तत्त्व, ग्रह-नक्षत्र तथा दिशाएँ इस अवतरण के समय शुभ लक्षणों को प्रदर्शित करते हैं।

राजा बलि वामन से कहते हैं कि आपको क्या चाहिए, तो वामन भगवान् राजा बलि से केवल तीन पग भूमि माँगते हैं।[21] उस समय राजा बलि के गुरु शुक्राचार्य उन्हें सावधान करते हुए कहते हैं कि ये साक्षात् अविनाशी भगवान् विष्णु हैं, जो देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए कश्यप की पत्नी अदिति के गर्भ से अवतीर्ण हुए हैं -

एष वैरोचने साक्षाद्, भगवान्विष्णुरव्ययः।
कश्यपाददितेर्जातो, देवानां कार्यसाधकः॥[22]

किन्तु राजा बलि भगवान् वामन को वचन दे चुके थे, इसीलिए अपने गुरु की बात नहीं मानते और गुरुदेव द्वारा शाप दिए जाने पर भी सत्य पर अटल रहते हैं। वे विधिपूर्वक भगवान् वामन की पूजा करते हुए हाथ में जल लेकर तीन पग भूमि का संकल्प कर देते हैं -

एवं शप्तः स्वगुरुणा सत्यान्न चलितो महान्।
वामनाय ददावेनामर्चित्वोदकपूर्वकम् ॥[23]

भागवत पुराण में बलि को केवल एक असुरराज न दिखाकर एक ऐसे दानवीर तथा सत्यनिष्ठ शासक के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपनी प्रतिज्ञा के लिए अपना सर्वस्व - यहाँ तक कि अपना साम्राज्य तथा अपना शरीर तक अर्पित करने में संकोच नहीं करता। यज्ञस्थल में जब वामन भगवान् विराट त्रिविक्रम

रूप धारण करते हैं, तब वामन भगवान् का चरण आकाश को स्पर्श करता है, उनके पैरों से स्वयं आकाश-गंगा का प्रादुर्भाव होता है, तथा ब्रह्मा स्वयं कमण्डलु के जल से उस चरण का प्रक्षालन करते हैं।[24]
वामन भगवान् के इस विराट रूप में सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, पर्वत, नदी तथा समुद्र आदि का चित्रण करते हैं, जिससे विश्वरूप दर्शन जैसी अनुभूति होती है। भगवान् ने दो पग में त्रिलोक नाप लिए - एक पग से भूलोक, दूसरे पग से अन्तरिक्ष एवं स्वर्गलोक नाप लिये। जब तीसरे पग की बारी आती है और अर्पण करने के लिए कुछ नहीं बचता, तब राजा बलि स्वयं अपना मस्तक अर्पित कर देते हैं। यह भागवत पुराण का अत्यन्त मार्मिक प्रसंग है। बलि की पत्नी विध्यावली तथा उनकी प्रजा द्वारा किया गया विलाप बलि की अविचल निष्ठा को दर्शाता है। इस प्रकार प्रहलाद के पौत्र तथा अपने भक्त बलि की इस त्याग-भावना से प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु उसे सुतल लोक - जो पाताल के सात लोकों में सबसे ऐश्वर्यशाली माना गया है - का अधिपति नियुक्त करते हैं, तथा स्वयं उसके द्वारपाल के रूप में सदैव उपस्थित रहने का वचन देते हैं।[25]
श्रीमद्भागवत पुराण में वामन भगवान् की कृपा का महात्म्य बताते हुए कहा गया है कि जो कोई भी भगवान् की इस लीला को सुनेगा, उसके सारे पाप धुल जाएंगे -

सर्वमेतन्मयाऽऽख्यातं भवतः कुलनन्दन।
उरुक्रमस्य चरितं श्रोतृणामघमोचनम्॥[26]

काव्य-साहित्य में वामनावतार के संकेत

बाणभट्ट रचित 'कादम्बरी' में पाँच स्थलों पर विष्णु द्वारा वामनरूप से बलि के यज्ञ में त्रिलोकी को अपने तीन पगों से अनायास मापने के उल्लेख प्राप्त होते हैं -

एक विक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयम् .... वासुदेवम्।
हरिचरणमिव सकलवसुन्धरोल्लङ्घनक्षमम्।
वामनरूपेणैव कृतत्रिपदीविलासेन।
बलियज्ञमिव पुराणपुरुष-वामनाधिष्ठिताभ्यन्तरम्।
हरिचरणेनेव संवर्द्धमानेन त्रिभुवनमलङ्घयत रजसा॥[27]

सुबन्धु ने भी 'वासवदत्ता' में वामन द्वारा बलि को छलने तथा बलि की पाताल में स्थिति का उल्लेख किया है -

वामन लीलामिव दर्शितबलिभङ्गाम्।
बलि भवनैरिव सुतलसन्निवेशैवेश्म।
पातालमिव महाबलि शोभितम्॥[28]

किरातार्जुनीय महाकाव्य में आकाश को भगवान् पुरुषोत्तम का मध्यमपाद बताकर वामनावतार की ओर संकेत किया गया है -

पुंसः पदं मध्यममुत्तमस्य द्विधैव कुर्वन्धनुषः प्रणादैः।
नूनं तथा नैष यथास्य वेष प्रच्छन्नमप्यूहयते हि चेष्टा॥[29]

शिशुपालवध महाकाव्य में वामन भगवान् द्वारा बलि नामक दैत्य को नष्ट करने का, वामन रूप में कपटपूर्वक बलि को बाँधने का, श्रीकृष्ण के स्वयं विष्णु होने पर भी बलि से पृथ्वी पाने के लिए इन्द्र का अनुज बनने का, वामन रूप में सूर्य और चन्द्रमा के मण्डल को पार कर आकाश में चरण के न समाने का, आकाश में पैर रखने के कारण 'विक्रमी' कहलाने का, तथा वामन रूप में अत्यन्त भारी चरण से बलि को दबाने और फिर इन्द्र द्वारा बलि को बाँधे जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[30]

नैषधचरित महाकाव्य में वामन (विष्णु) द्वारा एक ही चरण से आकाश का लङ्घन करने का, वामन रूप में कपटपूर्वक बलिराज के ध्वंस का, त्रिलोक-प्राप्ति के लिए विष्णु द्वारा बलि से याचना हेतु अपने को वामन (छोटा) बनाने का, सत्य प्रतिज्ञा रूपी पाश में बलि के आज तक बँधने का, बलि के नारायण का महान भक्त होने का तथा वामनावतार में बलि को अपनी कपटपूर्ण बातों द्वारा छलने का उल्लेख किया गया है।[31]

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य के वैदिक, ब्राह्मण, पौराणिक, काव्य, महाकाव्य - इन सभी कालखण्डों में वामनावतार की कथा निरन्तर विकसित होती हुई दिखाई देती है, जहाँ ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, तैत्तिरीय संहिता, ऐतरेय ब्राह्मण तथा शतपथ ब्राह्मण में विष्णु के त्रिविक्रम रूप का संक्षिप्त एवं प्रतीकात्मक उल्लेख मिलता है, वहीं रामायण, महाभारत, वामन पुराण तथा श्रीमद्भागवत पुराण में यह कथा क्रमशः विस्तृत, भावनात्मक तथा नाटकीय रूप धारण करती है। भागवत पुराण में बलि का चरित्र केवल एक पराजित असुरराज के रूप में नहीं, अपितु सत्यनिष्ठा एवं दानशीलता के आदर्श के रूप में उभरता है। कादम्बरी, वासवदत्ता, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध तथा नैषधचरित जैसे काव्य-महाकाव्यों में वामनावतार का उल्लेख प्रायः उपमा एवं संकेत के रूप में प्राप्त होता है, जो यह दर्शाता है कि यह कथा जनमानस में किस सीमा तक रच-बस चुकी थी। समग्र रूप से वामनावतार की कथा 'बल' पर 'बुद्धि' और 'विनय' की विजय के प्रतीक के रूप में दिखायी देती है। साथ ही यह सन्देश भी देती है कि चाहे शक्ति और सामर्थ्य कितना भी विराट क्यों न हो, अन्ततः वह सत्य, विनम्रता और त्याग के समक्ष झुकती है।

सन्दर्भ

1. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पञ्चम खण्ड, पृ., 35
2. i. अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या सप्त धामभिः॥ ऋग्वेद, 1.22.16
   ii. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूहलमस्य पांसुरे॥ वही, 1.22.17
   iii. त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥ वही, 1.22.18
   iv. यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ वही, 1.154.2
3. अथर्ववेद, 7.26.5

4. शुक्ल यजुर्वेद-संहिता, 23.49
5. देवासुरा एष लोकेषु अस्पर्धन्त स एवं विष्णुर्वामनमपश्यत् तं स्वायै देवताया आलभत ततो वै स इमान् लोकान् अभ्यजयत्। तैत्तिरीय संहिता, 2.1.3
6. ऐतरेय ब्राह्मण, 6.3.7
7. शतपथ ब्राह्मण, 1.2.5.1-7
8. रामायण, 1.1.29.4-5
9. वही, 1.2.29.9, 19
10. वही, 1.1.29.20-21
11. महाभारत, सभापर्व के अन्तर्गत अघाभिमहरणपर्व, दाक्षिणात्य प्रति, अध्याय 38
12. वही
13. वही
14. वही
15. वही
16. वही
17. वही
18. वामन पुराण, 1.31.32, 46-49, 52-53, 70-71
19. भागवत पुराण, स्कन्ध 8, अध्याय 15-16
20. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 16-17
21. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 18-19
22. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 19.30
23. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 20.16
24. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 20-21
25. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 23-24
26. वही, स्कन्ध 8, अध्याय 23.28
27. i. कादम्बरी, पृ॰, 13
    ii. वही, पृ॰, 242
    iii. वही, पृ॰, 267
    iv. वही, पृ॰, 278
    v. वही, पृ॰, 355
28. i. वासवदत्ता, पृ॰, 10
    ii. वही, पृ॰, 18
    iii. वही, पृ॰, 19
29. किरातार्जुनीय, 16.19
30. शिशुपालवध, 6.27; 13.12; 14.74-75; 15.28; 14.76
31. नैषधचरित, 1.70,124; 6.84; 5.130; 17.80; 21.43,59

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM